

[illegible]

मूकं ४ सर्वेष्वर्थसमन्वितं॥ वसुधैव कुटुम्बकम्॥ न ह्यायति कदाचन॥ यिह्यासुवषु सर्वेषु विम्व
मे हि ववगमन रुम। धर्मकामार्थमाकाशं न प्रनायादिददिना॥ यो प्रमास उम या फ य ४ क या न क ह
पवासनव रुयग। विम्वमव य दिहा मयि का यो ४ हा कि न ४॥ ह मि स या ४ मा सा कु लु या लु मा
व क य रु। की प्र सि द्ध य क ल य रा॥ श ऊ यी न दि ज्ञान ४। हि व रु कान स दि हा न॥ हि व ग मि थु न
सर्व पाप विनिमल ४ सर्वेष्वर्थसमन्वित ४ वसुधैव कुटुम्बकम्॥ न ह्यायति कदाचन॥ यिह्यासुव
ने मा स य व आ मि। हि व व ग म न रु म। धर्म क मा र्थ मा का शं न प्र ना या दि द दि ना॥ यो प्र मा स उ म या
या न ४ मि प्र ना द य वा स न व रु य रा गि स म व य दि हा म यि का यो ४ हा कि न ४॥ ह मि स
य य रा॥ न व अ या व क य रु। की प्र सि द्ध य क ल य रा॥ श ऊ यी न दि ज्ञान ४। हि व रु कान स दि हा

धान॥ विवममिधुनः श्व कायः विनिवदयत॥ अलं कृत्वा सुप्रयः ॥ न स्यथ च रुतं ॥ सुय
 ॥ सगीतन स्यवा शो नयम नागदा (हाहिने) ॥ अर्मने नूद्यमान ह्यमान ॥ सुनासुत्रे ॥ यिनय
 दामसंस्मान. नत्युसूतिकुलभूवा॥ नावडु गुमदमानि सुखी विवय प्रवसगु॥ प्रिकककुल
 द्यत॥ यागद ॥ मानमाप्रानि कुनाओग ॥ यवर्कना विवधमा रुवकानं विवधमा ॥ वाचनाना ॥ ॐ
 ॥ मायमासं उसंपाक य ॥ कयोनक हाऊन ॥ कहरा द्यनसंयको रुडानस्य यनादिय ॥ सोयव
 कर्क ॥ मिथुनवाग विवाय विनिवदयत॥ (हाय कृत्वा) (आदिर्क पूवाकं रुतलहगा ॥ ॐ रुनी
 न॥ स्यापस्त्रुलु (समासं य ॥ कयोनक हाऊन ॥ धमाका कोनती वांन. जितका (आजिनादियगा
 वाचनानादि ॥ वात्मी कायदिमृहि ॥ (समग्रका हादि ॥ ॥ त्वगिष्ट कोनव दानं धापीग

कमा ॥ ददाग्रय प्रयय वसमविना॥ अलिष्ट यतिमाहा अलरु हागं सुद ल्हं ॥ गधु नाट
 कन्द्रीदि दिव विगु लवलयक संयुगे ॥ सर्वत्रसंमायुक्तं कथयदी स्वनालय ॥ केलासंयुतमि
 भागन (भवत ॥ कमादाग हा (नलं रु ॥ केलासमाद शत्रिर् ॥ लिङ्गयि वसयकृत्वा अरु मास
 प्रजागत्रमायनेत ॥ यलरुत धरुर्वाय ॥ विवाय विनिवदयत॥ ॥ ॐ रुटिकर्मका (विमाने ॥ सा
 मान (हाययं प्रसंरुद्यान ॥ कोणवित्रक हाव ध्व भादरुतं कं रुया ॥ कमादाग हा ताकसि वा जानं
 पूरु ॥ ॐ रुलकली ॥ रुहायक (नयक मूहालालस्वलादि ॥ ॥ सर्वत्रलादि (स ॥ ॐ रुयं दाहा
 रु गन्धमाली वलं कर्त ॥ ॥ ध्वनप्रकसिने ॥ यथोद दीर्घं सु (हाहिनी ॥ वरुविधनसंयकं यलिना
 पुनं पुन यल विवदयत ॥ ॥ तलोर्ममादायाने ॥ विमाने ॥ सावकासिक ॥ ॥ वरुकाटि हातं हाय

पुष्पकृतं ॥ सूर्य काटिपनीका (६) विमाने सच्च का मुकेश नृप कना समाय के. मी लाव च रुर्त यो
 नामने ॥ चित्त गच्छ लया तिष्ठ सधैर्य समन्वित भागं की वपुर्न प्रमथि यथा कर्तुं कत्र सूर्य ॥ या वरु
 मगु ॥ विरु क क ल उ ॥ साधु लगन उ ॥ का अ (अभिमान) ज्ञान प्राग समासाय सत गे व विम
 म ॥ वाचनान ॥ ॐ यमव ॥ समाख्या तं समात्रा र्थे व वारुनी भा काय य ॥ हिव धर्म ॥ हिव धनि व धिना
 य य ना न्द य ॥ साय वा स ॥ य उ द्ध ॥ र व द ल य प द य ॥ हा वा य न मा ध्म ॥ ३३ प द या द न क म्ब ल ॥
 त ल रु ॥ ॐ न्द नी ल य गी का (६) विमाने ॥ स विम य ॥ ग ल्हा वि व पु र्न प्र मथ रु क ल ग न य (अभिमान)
 ना (अभिमान) विम य गी का (६) विमाने ॥ स विम य ॥ ग ल्हा वि व पु र्न प्र मथ रु क ल ग न य (अभिमान)
 त ल रु ॥ ॐ न्द नी ल य गी का (६) विमाने ॥ स विम य ॥ ग ल्हा वि व पु र्न प्र मथ रु क ल ग न य (अभिमान)

३२

प्या ११ येर

सूद लरु ॥ ग लु ना र क यी धू न क ल्हा के ला ण य व न ॥ ॐ ॥ य न मा स मायु कं सर्व धनु विरु धिनी ॥
 लय ॥ के ला स वु न मि ध व वै ॥ स्यां या समा व प्र त ॥ के ला स क ल्य याने ॥ सा नि व दि स व ल क वू उ क
 य क ल्हा ॥ ॐ मा स स व दि क ॥ रु क्क र्म य ॥ ॐ ग ल्हा ॥ ॐ व क य ॥ ग न व दि नी ॥ उ य ॥ स ल वि (६) भे द न
 र्म का (६) विमाने ॥ साधु कामिक ॥ वर्ष का टि हा त सा र्थ नि व लो क म दी य ॥ रु क्का ल ग न य ध का
 र्म लो क सि न्ना ज्ञान य नि मायु या न ॥ ग र्म यि ध म य क ॥ दा या र्थ यि वि रु ख नी ॥ स व वी ज न स धा यि म
 र्म ॥ ॐ ॥ दा हा ण यो य ल क र्ती ॥ न ॥ ॐ ॥ यि ध म य ॥ स व ॥ य दी या य य (६) हि र्नी ॥ स व रु क स मा की
 य न र्म य क ॥ य लि ना स र्म य स रु ॥ आ या रु यो र्म मा स्या न्वा ग र्म ल्हा यो नि वा ल य ॥ स र्वा भ व क न (६)
 व र्म का टि हा त सा र्थ नि व लो क म दि य न ॥ रु क्का उ वि प लाने हो ग न्त् सर्व लो क ध धू क मा न्

॥याया न सर्वे हा गार्थ सर्वे लोमं गृहं लरुत् । सर्वे श्रुत समाकीर्तु विविध धृत् । (हारि न) निवदय
 ॥वयकाटी हारं सार्थ नृद ला क म हो य न ॥ विविध न उ व न्ना की म न व वा य वि प्र ला नि वि ॥ क मा
 ॥विमान धृत् व मा श्रे द्रो उ रि ध्व नि ध द य न्ना । दि वा क न क न य खो म हा याने र्म (हार न) ॥ व य का
 दाः क्रमां ग ह ला क सि न्ना ना जा न य नि मा प्र या न् ॥ क ला वा श्र य ज मा स वि प्र र्ध न्ना य व र्त्त ॥ सु व लु व म
 काटि स ह सानि नृद ला के म हो य न । नृद ला का दि ला क म उ क्ता हा ग न्ना (थि पि ता न् ॥ सी या क्क फ सि
 श्रुत समायुक्तं सर्वे न त्वा य (हारि न) ॥ धृत् उ रि ध्व नि ध द य न्ना वि ता न व य (हारि न) ॥ ग (मे मा ल्ये स श्रु य
 या म स श्रु य (षो मा क्क लो ध्व वि (ष व न ॥ म हा धृत् क य न्ना वि वि प्र क स म क्ता र्म ॥ न य न्ना म
 ॥ क ला वा श्र य ज मा स वि प्र र्ध न्ना य व र्त्त ॥ सु व लु व म

पूजिनी ॥ नृव सर्वे नृद व य क र्मा द न्ना य ज मा स वि प्र र्ध न्ना य व र्त्त ॥ सु व लु व म
 द कि ता द ॥ सर्वे नृद समायुक्तं यथा वि ह व क ल्यि नी । नि व द यी त नृ दाय कालि क न ग म र्म ॥ या
 पूजा न त्वा र्थ काटि गू नि र्त्त या य या न्ना त र्म ग य श म हा न न्ना प्र रु याने सर्वे न त्वा स म न्नि क ॥ गी त न्ना
 ॥ न य न्ना नो समाकीर्तु दि वा ग न्ना व र्त्त ॥ धृत् उ रि ध्व नि ध द य न्ना वि ता न व य (हारि न) ॥ ग (मे मा ल्ये स श्रु य
 द्वा सर्वे नृद ला क म उ क्ता हा ग न्ना (थि पि ता न्ना य न्ना क र्मा दि हा ग न्ना ना जा न य नि मा प्र या न् ॥ सु व लु व म
 य कि न व र्त्त क्ता र्म र्म द व स मा प्र या न् ॥ म न य न्ना व न्ना र्म गी ली यि ध्व र्म वा स क ल्यि र्त्त ॥ क ला म
 वा य न्ना क्क ल्यि र्त्त ॥ सर्वे काम म वा प्र या ता क्क ल्यि र्त्त ॥ क म म मा य मा स र्म य नि र्त्त ॥ मा सो क
 क र्मा (हारि न) धृत् उ रि ध्व नि ध द य न्ना वि ता न व य (हारि न) ॥ ग (मे मा ल्ये स श्रु य

三

चान्नसमाविती॥ यजुयस्तुव्वदवध्वदहादि क्ववलिह ननावतिनालजयत्यध्व विवरुकान् स
 क्वकनगमस्तमी॥ या कय्यात्मकदयाव तस्या ४ यजुस्तुल्लिख्ये । सवागमसूययुध्म मतिहि ४ कथितं
 मन्त्रिको गीतनृणादि वा शिष्यः क्रय्यस्तारिष्वध्व हि न ४ सूयकाटि समयस्व विमाने भवत्सनि
 गदादि हि ४ त्वक्तु न्दासर्वगह्वरा यथानि ध्वनमधि न ॥ कल्पकोटि हारी दिव्य मादत सामध्या ॥ न
 ॥ सुप्रयासु रक्षानि र्थ एवनि ध्वन राविता ॥ यय कामस मूर्द्धि ध्वन नना विनयूडाका ४ यजुः
 कल्पितं ॥ कल्पाम ० इहं वा यियथ विरुव संरुवं । सद्वाय कन रक्षयतं सर्वं अनयुयुविता ॥ नि
 यक्ति न ४ ॥ मासो न यत्र यं कय्या चिदवर्तमानं ॥ हितं ॥ ध्वनो ध्वन क्वि सयूकं ॥ वृष ह ४ समल
 क्त्वा सुवदिता ॥ विनयस्य नथ मध्य ३ यजुयस्तु नलक्तनीत दापो नाजमा जल सुखरुयादिनी

याद्युपलब्धिरिति॥यद्वैककप्रदनेष्ट॥कययोनहनेविष्णो॥यहारासायनकत्वा नहकाताष्टरुजनी॥
 तवदयना॥उक्तायवान्वेसाद्वैयवमहाइद्वयु॥यवनसर्वदातानामसिधमभोजमायात॥व
 सर्वोदितनयनेव नत्यसकललरुत॥सूर्यातिप्रतिकालो विमाने सार्वकामीके॥विमय
 न॥कल्यकाद्ययतीसाय नस्यान समदियति॥यश्चहृदिसमायका मृदोखदामलकती॥सर्व
 वदयना॥

गा॥निवहानाथतत्त्व॥आवायोविनयावित॥संप्रैकगमयथाश्चेवमुल्लका नवासनेशरुकेरुके
 तावद्वयसुरुमातिनूयलाकमदियता॥हिवादिमूर्चलाकष॥उक्तालमनदोषगा॥कमागैदाग
 गाहिवायविनिवदव विछुदनाकवात्मना॥नूयकादशाकुल्यात्मा वनरागादिहिरुले॥हिवादि

३०

यता॥निवा॥उक्ताउदियलान हागान्छावकलउ॥सदृशावदक्त हानमासा य प्रसादात्यनमसि
 र्नी॥निष्फकलउ॥साद्वै ६६यत्तु लमापूयात॥सूर्याकादियति कालो विमाने॥सार्वकामिके
 ॥गस्याहितयूनदिय मंछासावियतिवृवत॥उक्ताउदियून हागान् यलयसर्वदहिनी॥मा
 ॥सर्वग॥पलियुच्छिष्ट॥हितवद्यतिनयय॥वद्यादरुयंमखीर्ग॥हिवायातिव॥रुला॥स
 र्जनी॥तदा॥गो॥पृथिवीरुमीया॥यावद्रुमसुमू॥ति॥॥००तिमीनदीकध्वनयलीन
 नन्दि कध्वनडवाय॥सर्वधामववर्धुना॥हितधमनिध्विना॥हितधमोहितनाको धमकामा
 वरुनावाय रुक्षमी॥खाद्यमादरुवक्या यथावामसुव्वरुन॥अग्न्यागनसमायकभेधमना
 र्थागनात्रयीविहासमव यदीहा मग्नि कार्यो॥हाकिना॥विहासमक का ल्पौ पंज यककि

[illegible][illegible]

वतिरुविदिन॥ कायातिथानसंवाधमाद्यादिनकदादिप्रामनसायुक्तयहृक्का दहननवाहय
ननसं रुवे॥ द्विवाथेषुष्यसिंसायांनसंरुवत्सुडहिंसक॥ यशस्यमयिचमाथ हिंसाहृदि
द्विवगृहाणमि॥ अवाग्यातिथिरु काथमयत्तवासाकावर्त॥ आसाथयभयथसाहा सनकाथसजीव
वेरुहृणीयरागनयकविगद्विवाचनं॥ कवीनवातद्वनयनानि हृदिजीविनी॥ आथनायाऊयहृमा
स्या हृदिवाचाग्रिगह्य॥ रुवजिगद्विय॥ ना नोदिकाहृदिकाथवा॥ सर्वसुविनिमूर्क सनमल
ननन॥ रुय॥ द्विवयनिद्वय रुमानिश्चजिगद्विया॥ नूदाकृककनीरुस ऊटकायमसक
नगम॥ सवसत्तानी नूदलार्कसगद्वि॥ नूदक॥ द्विवस्या काथाया नूद ऊटासदा॥ सनिस्वद
यद्विनिर्मर्क॥ द्विवलार्कसदीयता॥ नूदाग्ररुयत्तवीङ्ग नरुसायनिकिहिनी॥ धमनसर्वदक्षानी

३७

छुयागमवायूयात॥ य॥ स्नानमावन्ननिहृमा (ग्रयंसंयगद्विय॥ कल्लेकविंशमहिंय सगद्वयनर्म
मयमायन्न॥ सर्वनीथेषुययुष्यसर्वनीथेषुयहृलं॥ गहृल्ललरुगतिहृरुसास्नानानसंक्षय॥ महा
सस्नानात्यनंस्नानं यद्विगनेनवविद्यनाडकायवमद्यवे॥ स्नानादवस्वयं द्विर्व॥ गत॥ यरुतिवकाशाम्
नमा (ग्रयंयसमावन्न॥ नूननवसविन्नन सनूदांनोदामयः॥ दक्षीलदीलयकावायावासा
जायनिश्च॥ सनयूजनं॥ ॥ सनंऊयहृसादविवातहिवाहृया॥ नूदाग्रयत्तवीङ्ग नरुसायनिकि
द्वेवाहृवगियुजिन॥ नूवेकल्यमनिससा हृऊयद्विवहृमनं॥ रुयनायिरुयाधन हृति॥ ॥
य॥ द्विवरुसना॥ गहृल्लपविहृद्वथनिहृमसुडयहृदीना॥ गहृल्लपविहृद्वथिरुवदक्षानी
रुकासननवा॥ अचिवर्ग॥ रुयद्विरुवदक्षानी॥ रावसुद्विषकोवममुयूतंजलधिव

॥ इति पूतं न स त्यादं स एषूतं वदावदत् ॥ जातक लायका नीत्या यदा द्वावयनं रुवत् । य
 हं गानो लिहूत न क म्या वयति ॥ ४ ॥ कि मति श्येयत् ॥ ५ ॥ वदूत ला ॥ ५ ॥ इति कामे क
 मेक ॥ ६ ॥ द ॥ ६ ॥ इति वयनायने ॥ ७ ॥ सापिहयवनं कत्वा यागिनि न च ना रुवत् ॥ वसदा यत न नि
 नयूत न युक ॥ ८ ॥ कोपिना क्वादिन ॥ ९ ॥ सदा ॥ यागिनी रुकि यागिन याग क्वा न म वा प्र यात ॥ इति वधान य
 जातगा रुकं शाय मी क्षना कं इति वार्थि हि ॥ १० ॥ सर्वे नाना यवन मस्मिन् धर्म ॥ ११ ॥ सयना ॥ इति रुकि ॥ १२ ॥ स
 रुवपूजा ॥ १३ ॥ कर्मान मनसा गिना ॥ इति रुकि सुदा का यो न द द्वा इति वया गिषू ॥ १४ ॥ सुद द्वा त्रि वि
 इति वस्यार्थ ॥ १५ ॥ किना मक्रियत न न ॥ १६ ॥ यत्क रीति वरु काना न रुक रीति इति वरु वत् ॥ १७ ॥ सदन म
 न रुक क रीति वरु वत् न न सयना ॥ १८ ॥ इति कत्वा यथा न्याय मध्व मध रु लैल रुत ॥ १९ ॥ निर्या इति व क था

रुक्ता इति वरु कं ययुजयत् ॥ २० ॥ गता मनया द्यार्थ म धूय क्वा दिहूत न ॥ २१ ॥ य ॥ २२ ॥ स्वर्गा न न म स्का न क र्या द
 द्वा त्वा यमासने ॥ २३ ॥ विहा द्वा र्थ मरु मानि पून न न यून व सत् ॥ २४ ॥ इति रुकं गुरु द्वा इति वरु निया न न
 ॥ २५ ॥ गता रुक्ता द्वा र्थ विष्णु लोक मरु हियत ॥ २६ ॥ इति वरु कं दिहूत न मधूय क्वा यनूक माता ॥ २७ ॥ रुक्ता यि वा
 ॥ २८ ॥ ययदा न न रुमस्व ॥ २९ ॥ गुरु ल रुत ॥ ३० ॥ रुलै म् गीत लै रु सर्व काम म वा प्र यात ॥ ल रु द्वा यय द्वा
 गथा स्नानं सारु ग्य वृद्धि वदनं ॥ ३१ ॥ स्नानं विविध भा वार्थ वा न र्क्ष ला क मा प्र यात ॥ ३२ ॥ सुद विन्द य न
 या सा रुलै धान् मार्क मलिन यागीन ॥ ३३ ॥ याल यि स्वा यथा हा क्वा सर्वे या य ॥ ३४ ॥ यम यती ॥ ३५ ॥ ना गारु स्य
 लाय न निहा यात ॥ ३६ ॥ सम सुहृ न या न ग ॥ ३७ ॥ सुनूय ॥ ३८ ॥ सुहृ ग ॥ ३९ ॥ मा गी न मी वरु ॥ ४० ॥ सुय रुक या ॥
 कम होयत् ॥ ४१ ॥ दानि द्वा रु वनि म्म ग्ना द्वा रु रुत म य तत ॥ ४२ ॥ समुद य यं भा हा क्वा सर्व काम म वा

वावयनरुवत्। यदवयुश्च दिक्कायां तयर्थवयनयन॥ कठीमृधु निरिवायिरिक्का क्षा विमतस्य
 न॥ १३॥ इति कामेका नृपविबुद्धयत्॥ डयवासाय नृह कामकार्त्तं गृह्णितमर्त्त॥ सर्वसङ्का विनि
 रसदायतेन निर्यै सगह॥ १४॥ शिवधर्मीक॥ यथाभेककमोत्सा यथावाटी क्रियायत्र॥ १५॥ वि॥ १६॥
 याना॥ शिवधर्मानय॥ १७॥ ना॥ १८॥ शिवधर्मानयनायका॥ १९॥ सर्ववत्समाहृया॥ शिवरुका॥ शिवसमा॥ २०॥ म
 ॥ शिवरुकि॥ २१॥ सदा कानि नहि सा सर्वदा समा॥ २२॥ सकाशसुखमसुखं वक्तव्यं तथा कर्त्त॥ यथास
 तेषु॥ २३॥ स्वदहानिर्विघ्नोपह॥ शिवरुकाध्यालयता॥ रुयदा विद्याया गच्छ सुखं कथां लिखानिच॥
 रुयता॥ २४॥ सदनमपि गन्तव्यं यत्तु माहृद्वनिजन॥ २५॥ यत्तु यिद्वक्तव्यं सुखं निरिक्ता रुय॥ २६॥ माहृद्व
 ॥ निर्यै शिवकथां कर्त्त॥ निर्यै शिवयनायन॥ २७॥ नृपयि त्वायथा न्यायं मनयत्यलरु नृप॥ २८॥ शिवधर्मागतं

३२

मस्मान् कथां दयति हि तादनी। यथावत् सर्वसुखं मानि सायिला कमदीयता॥ पाफा यतिवरुको यथा
 विवृणुति यानना वर्षकाटि सुदमानि वसुधैव कुटुम्बकम्॥ शिवरुकाय विद्याय पादोपका लायतन
 ता॥ लाकृयि त्वायथा न्यायं शिवलाकमहियता॥ २९॥ नसुवाहन कत्वा भामलाकमवापूया गृह्यति
 तुरुदीययदानत स्नानवद्वनति द्विर्था॥ ३०॥ दृष्टव्यं यद्वानत सिद्धासनयति कवन्॥ दत्वा मूर्त्त
 ॥ स्वदविन्दयनीनाङ्ग मध्वममद्व कथितेन॥ ३१॥ समी कृत्वा लवन्दन वालूलाकमदीयता॥ कृपि
 ता॥ ३२॥ नागाकस्य शिवेदत्वा र्हेयञ्चाथ॥ ३३॥ यत्र नृप॥ ३४॥ यत्र काटिहारी सायं शिवलाकमदीयता॥ क
 ॥ ३५॥ युरुज्या॥ ३६॥ स्त्री॥ ३७॥ शालना गन्तमदिग्र माद्यानं प्रियतस्कृत्॥ ३८॥ माहृद्वि निसमाध्वस्य शिवला
 ॥ सर्वकाममवापूयाता॥ यत्रिगहामुसकी (कु) ध्वत्तु लादिय किर्त्ता॥ ३९॥ कानूध्व सर्वरुगं शो दयम

हरेणैव कायं धर्मं कुरु ॥ हरेणैव धर्मं कुरु ॥ यत्तु मूलं कुरु ॥ दत्तं गणायना यो यि
 र्मर्षं तर्षां वाच्यं मधुन हरा ॥ नृमृतं सन्निनिर्भवं ॥ नृन स्य हरी तर्षा ॥ धर्मं विना धिनिम
 हं असायान् ममत्वं ययि र्मर्षं ॥ यत्तु नादि गमनं मनवः कायि र्मर्षं ॥ यत्तु हिलायना दृष्टिः ॥ य
 र्मर्षं यत्तु न ॥ सन्नु भविता ॥ जिवं रुव रुवानि ही मष्टा पार्थ यसा धर्मा ॥ नृनि वाद मिदं वाकं सर्वे कार्य
 सर्वे कर्मसु ॥ नृवमादि जिवता वा नृ मनः स्या जिवता धमि ॥ नृसंभवा यनिर्मकः ॥ जिवला कर्मही यन ॥ जि
 र्मर्षा ॥ नृकृष्ण स्फाति नावायि यो नाका धनं तागु यन ॥ वाचा था विवृतं सुखं ॥ कानि नृमासु निर्मा
 नी ॥ रूपन योगतया कृपा यत्तु दानादि सुखिया ॥ कां च न स्य वथा यस्मा रुस्मात्का र्थं विवर्जयत ॥ म
 यतः ॥ कमा दानं तयः ॥ सुखं कमा ॥ हि सा कमा धर्मी ॥ कमा सुखं स्या मा कस्य कर्म यव जगदृति ॥ सुखं न सा

प्रथा कं जिवता ग्रमानं कायं धर्मं ॥ ११ ॥ ॥ नन्दि कं जिवता वाच ॥ नृथर्षं कृपता वं नृ
 तयं धर्मं जिवलिङ्गं मयूजितं ॥ तदा तत्पूज्यं यागं कुरु सन्नु दानागुर्गं सयः ॥ स्नातने वयं वमुर्षं नाद
 लं निवथा गिनं भवय ॥ नृवगी र्थं नमस्कृत्या दृष्ट्वा लिङ्गं दृष्टुं ॥ रुक्षिया नाध्या तिलं ॥ जिवथा
 स्य मां गलं गुनं गुरुं ॥ कव काया नि विर्यं कुरु कलितं ॥ विवर्जयत ॥ सर्वे दाना यतय साः
 ॥ धर्मं मयमनिदू जा द्विवर्जयत ॥ कर्मयं कं जिवरुकि ॥ कं (गी र्थं कं जिवार्थं नृ ॥ सर्वती र्थं धर्म
 दज नमर्षं कायं धर्मं नाका दि रुजर्नं ॥ नृजं धर्मं दि सं स्यु र्धं जिवरुका विवर्जयत ॥ नृज
 धर्मं तत नृक ॥ नृजं धर्मं विवर्जयत ॥ रुक्षाला रुन रुक्षयत ॥ रुक्षाला रुन रुक्षयत ॥ रुक्षाला रुन रुक्षयत
 कपूजयति ॥ रुक्षदं र्थं यथा कश्चि त्वं दुरु मलदूषितं ॥ नृधर्मं तत था नृजं नृनि मर्षं

[illegible][illegible]

न नानातिमो लोनेवर्ष संकीर्ण कलमदिहि ॥ स्नानकुक्रियवरुक्ता नतङ्ग द्वागिर्गकत्र ॥
 साधुतयस्त्रिनां ॥ असुम्यादिसर्वेषु यद्वथा नूतथापयि ॥ मधुकर्माश्रमाद्यङ्गयुक्तानातिवि
 यत्नाद्यवैसुवर्जयत् ॥ त्रिकलभककालंवा नित्यं स्नानं समाचरत् ॥ सोचश्रुमर्कले ॥ कृष्णग
 गायकुश्रीतरुस्मनासलिलनवा ॥ यात ॥ स्नात्वा ॥ मृसा गच्छ रुस्मनावा शिर्वयदं ॥ पायकं चूकम
 जनैर्यदागच्छ ॥ स्नात्वा नैव कलत्रयत् ॥ त्रिमय कलसंयक ॥ समस्तैश्च यो संयुक्त ॥ गच्छुकि
 संयुक्तैर्नेवयै ॥ श्रुजयच्चिवथागिन ॥ चित्तं ॥ सर्वदवा ॥ शिवमाश्रित्य संकिता ॥ यो न शिवगुण
 र्कनमनसं प्रादुर्बुजिवथागिनं ॥ यदि श्वनादितत्त्वा मां यमिह न विवक्त ॥ रुवसात्र मयैव प्रमत्ता
 ॥ वेप्राग्यं मतिवर्तनं ॥ रुस्मनिष्ठयतीह स्थ ॥ दिवसना पियत्तुलं ॥ नतङ्ग कगदं दैतया पुं क

६२

न ॥ वाचा ॥ शिवा ॥ शुभयत्ना ॥ तनु सु द्वाचक ॥ स्मृत ॥ वाचा वाच करुवाय मनादि ॥ संस्मृत ॥
 गात्रा भाचक ॥ स्मृत ॥ वाधीना भूषणं यद्व ॥ त्यतिय कं स्वरावत ॥ तद्वत संसाजदाया नां पुनिय क
 हि निजाला कं गगयथा ॥ तस्मादनादिसर्वे ॥ यत्रियुक्त ॥ स्वरुवावत ॥ मकिह गु ॥ शिव ॥ सिद्धस्
 धयत्ना मनु ॥ सिद्ध ॥ यत्र ॥ शिव ॥ वद शिवा गमवाय मूरुय गुष्ठ ॥ कत्र ॥ मनु ॥ स्मृत ॥ तां म
 ॥ शिवायति मनुयं द्वादिसंस्मृत ॥ गनाधीनं नृनं स्मर्तनं न सर्वमनुष्ठितम् ॥ यतो नम ॥ शिवायति
 मनुस्य तानि श्रुत्वा नमासत ॥ एतावरुच्चिवत्तन भगवत्पत्रमयदं ॥ यदा नम ॥ शिवायति शिव
 य ॥ समुवायं कथं वदत् ॥ सर्वे ॥ यत्रियुक्त ॥ दन्वथा कनरुगुना ॥ कृयादायं शिव ॥ मनु ॥
 ॥ सर्वे ॥ सुहृथावदत् ॥ नागदवावृत्त ॥ काव्ये यस्मादन्तं वदत् ॥ तत्र श्वपनविशक्त कृयात्कथ

मन्त्रथा॥ अङ्गाणां (धर्मद्वयं धर्म सर्वज्ञानमिव नयत् ॥ बुधीतममर्लं वाक्कृतम्युमा विन्नसंसय ॥ तस्मादि
कृत्यवकारं गिववत्पूजयन्तु ॥ नय ४ यत्रायकात्राय चान्ननयसमद्वयत् ॥ जगद्धिताय नयति ॥ जि
(धर्म) स्यामाद्वयनिरुक्तिः ॥ तलुदायननलाक सुत्यार्मध्याह्नयनव ॥ धर्मनिष्ठ ४ कृतावाजा धर्मयो
न्यायनयात्तयत् ॥ न्यायनयात्तमानाका आयनि ह्यामिन ४ धिव ॥ धर्म ४ काम ४ यच्चान्यन्याकु
रुवन्तय ॥ अधर्मिष्ठ ४ धर्मस्य चउर्था (धर्म) लिखत् ॥ तस्मादधर्ममिर्कृतं नाजाला कनिवानयत्
यत् ॥ नयति वाधयत् ॥ तस्मात्सर्वलाकान्कयत् ॥ डयायनहायालाहा नूखोत्तदान्वाधयत् ॥ मे
या ४ धर्ममाज्जवर्तनयत् ॥ दा ५ ४ ४ यकिर्लिङ्गा यस्याया ४ ४ ४ वादन कामा धारि ननय ४ ४
द्व ४ ४ जगद्गुरुसर्विहय स्यर्वलाकान्कयत् ॥ संसारयत् ॥ निर्मय ४ ४ ४ समद्वयननयत् ॥ धिव

ज्ञानात्तन्मनश्चयति, कर्तुं न प्रयति यत्तु ॥ नित्यं वाञ्छन्तमहता, नित्यं वाञ्छन्तमहता ॥ ४ ॥ या यामहता
 न ॥ ४ ॥ नित्यं कुरु यत्तु लोचिनी ॥ नागद्वयान्नकाध, कामरुष्मन्नुसाप्रियता ॥ वाक्कनित्रयत्तु कुरु कुरु ॥
 कुरु नायत्तु कुरु जायत यत्तु, नागदिनात्तु स कुरु ॥ विनयमयित्तात्तु विनयमयित्तात्तु ॥ ४ ॥ रुनी ॥ यत्तु
 ॥ ४ ॥ पूगवादिनात्तु ॥ ४ ॥ सत्तु सत्तु सत्तु सत्तु ॥ विदुषात्तु सत्तु सत्तु सत्तु ॥ सत्तु सत्तु सत्तु सत्तु ॥ ४ ॥
 विदुषात्तु सत्तु सत्तु सत्तु सत्तु ॥ विदुषात्तु सत्तु सत्तु सत्तु सत्तु ॥ विदुषात्तु सत्तु सत्तु सत्तु सत्तु ॥ ४ ॥
 ॥ यत्तु नायित्तात्तु सत्तु सत्तु सत्तु सत्तु ॥ यत्तु नायित्तात्तु सत्तु सत्तु सत्तु सत्तु ॥ यत्तु नायित्तात्तु सत्तु सत्तु सत्तु सत्तु ॥ ४ ॥
 यत्तु नायित्तात्तु सत्तु सत्तु सत्तु सत्तु ॥ यत्तु नायित्तात्तु सत्तु सत्तु सत्तु सत्तु ॥ यत्तु नायित्तात्तु सत्तु सत्तु सत्तु सत्तु ॥ ४ ॥
 नित्यं यत्तु सत्तु ॥ यत्तु नायित्तात्तु सत्तु सत्तु सत्तु सत्तु ॥ यत्तु नायित्तात्तु सत्तु सत्तु सत्तु सत्तु ॥ यत्तु नायित्तात्तु सत्तु सत्तु सत्तु सत्तु ॥ ४ ॥

ससय ॥ तस्मादिष्यन्वा कनिष्ठद्वयानिविवक्षिता। यथार्थं पृथगाथम् न दृष्टुं वा बुद्धदध ॥ शिवव
 द्दिनाय न यतिं शिवधर्मनिर्यजयत् ॥ तन्निशा गादयं लोक ॥ ४४ ॥ वि० स्याद मंगल्य ॥ ययिधर्मनन ॥
 ४५ ॥ नाजा धर्मयोदेक कास ॥ यगयसविहूय सुस्मादा जात्रुयग ॥ धर्महूयतर्तुवाजा पु
 ४६ ॥ यच्चान्या युमीदृते। गुरुदाध्याययत्नन पडाधर्मो ध्याययत् ॥ युजा सुधर्मयकासु ४७ ॥
 ला केनिवाययत् ॥ ४८ ॥ निशा उयनिर्धु मरुयार्थं विवक्ष ॥ ४९ ॥ धर्मशिवनयतस्मा लुका ॥ ५० ॥ धर्म
 । दानवाधयत् ॥ मेनुष्यधिवि क्रिया शीर्षो लुका धर्मनिवहायत् ॥ मन्त्रो मधिविनि विहूय विलमूलनसकि
 धारि नननय ॥ ५१ ॥ धर्मनिय ॥ ५२ ॥ ननया गयन ॥ ५३ ॥ मातु ॥ ५४ ॥ सर्वयत्न ॥ ५५ ॥ नानमाधय
 ॥ ५६ ॥ नन ॥ शिवहूनासक कन कननसदृ ॥ ५७ ॥ यिता ॥ ५८ ॥ ननवक्रि सनक निवाययनिय ॥ ५९ ॥

५१

धि ४

॥ ६० ॥ या यम हूनाम समन यत्नलाक सुरुविर्ग ॥ ६१ ॥ अयवज्जि र्थं हाचिर्ग यस्स रुचिर्ग। वाकमनिव
 ॥ ६२ ॥ अयव रुत्तरुत्तराभिगमवाग ॥ ६३ ॥ ननायिकिक्तन मुदनाललितनय ॥ ६४ ॥ विद्यानागवा कनससात्र कुडा
 मति ॥ ६५ ॥ रुनी ॥ ६६ ॥ यना र्ण लावर्ग वदा ॥ ६७ ॥ माविस्मला निव ॥ ६८ ॥ यय ॥ ६९ ॥ यसा सर्व धमा ॥ ७० ॥ ययक विहूय
 ॥ ७१ ॥ विहूय कन ॥ ७२ ॥ यमिदं हूय ॥ ७३ ॥ यय ॥ ७४ ॥ यय ॥ ७५ ॥ यय ॥ ७६ ॥ यय ॥ ७७ ॥ यय ॥ ७८ ॥ यय ॥ ७९ ॥ यय ॥ ८० ॥ यय ॥
 ॥ ८१ ॥ यय ॥ ८२ ॥ यय ॥ ८३ ॥ यय ॥ ८४ ॥ यय ॥ ८५ ॥ यय ॥ ८६ ॥ यय ॥ ८७ ॥ यय ॥ ८८ ॥ यय ॥ ८९ ॥ यय ॥ ९० ॥ यय ॥
 ॥ ९१ ॥ यय ॥ ९२ ॥ यय ॥ ९३ ॥ यय ॥ ९४ ॥ यय ॥ ९५ ॥ यय ॥ ९६ ॥ यय ॥ ९७ ॥ यय ॥ ९८ ॥ यय ॥ ९९ ॥ यय ॥ १०० ॥ यय ॥

४ सर्वे लोकस्य मातृ ॥ तन्वा सुरुडासुनरी सुनीला ॥ सुमना सुथा ॥ गव ४ निवयूना ल्य ३ किति
 ४ सो साना चोर्थ निवस्य च ॥ (गमय) भावनामूर्तं कीर्तनं दधिघृतं गवां ॥ यच्छु निवयिना विस्व
 ४ श्री ४ श्री वृक्षसुनसुत ॥ वीजा नृत्यलयमानां पुनर्जातानि (गमयत) ॥ (ग) भावनायमाङ्ग ल्य
 ४ देवानां निवस्य च वि (ग) यत ॥ यदि ईज गत ४ किं विरु कुर्यं कीनय म्भवसाद व्र ४ सर्वो विजातानि
 ४ अवसाययक्ति ॥ मदने वा पूनायन कषायैश्च विन कुर्यत ॥ सायधामा म्स्वायश्च लिगलावनयाह रु
 ४ यायर्मदधिरुका ४ यममधायतिपूर्णा ॥ निवदयो गवां य रुका क्वा याश्च य वाया विगान् ॥ रुवाय द
 ४ यत्रैव सावर्नि कामानययक्ति ॥ (क) त्वा यदकिं वाक् यवियस्य कमाय यत् ॥ नूननविधिनादव ४
 ४ पूजयक्ति ॥ विवरुका सुमरुया कलानामक विहानि ॥ (प्र) स्थायस्वयंगक देव नम्यदमवय ॥ नृणा

४ रुगा नुस वियलान रुखवर्ज समन्विता कालात्यन विहा यात ४ यथि वा भकला रुवताव का ४ य
 ४ पूजमानवा य ४ य (व) रुकिता द्विती ४ त्वान्मादयैश्च सय याग रु लीलरुता ॥ नृचिर्ता हाकृद द्यु स
 ४ य ४ य (व) रुद या निवम ॥ साये या गुरु ली कर्त्तु या पूयाना यर्सं हाय ४ ॥ प्रत्वा न्मादययुष्म मे
 ४ आनाचन कर्त्तु नय ४ रुक्मा म्मादयदी हा गत्सर्वे त्वयसाद न ४ ॥ निवयुष्म मरुत्सा य मर्मे
 ४ य ४ युष्म मनमाद यत् ॥ नृसं हाय मति ४ धा द् रुत्सर्म ययुष्मा पूयान् ॥ निवधमो ४ निवया का ४
 ४ वधमो रुव यच्छ विधिर्नामयधमाय ४ ॥ १ ॥ ॥ नृथ विद्या विदान्दयं विद्यादानं हि वात्म
 ४ वाधयत ॥ निवविद्यान सावन विद्यादानं नदयत ॥ स कर्त्तु ४ या कर्त्तु चो क्ते ४ य विद्यान नृय
 ४ न ४ तथा विद्यायदानस्य नान् ४ सर्वे सुखासक ४ निवा ४ रुहा मेधय विद्याने दो रु लील रुता ४ ४

५२

[illegible]

सनासीनं तन्म (यू अयूस्क कं) ॥ नर्वलिखद्वाचयद्वा कृत्वा यूजां दिनदिन । चतुनसस्समनाय न्ना
ग ऊर्ध्वदीर्घादिलङ्गिने ॥ नन्दिनागनेकवर्त्तु लं खयं क्वियूस्क कं । संयूधुं यूवविदिना यून ४ यूजा
गवादिगमो धनसुने ॥ गीतनृथे वदविले न्नाख्यानं धिवात्मकं ॥ वज्रघोषं वदिविले ४ ध कृ हाके ४ व
म (शा रुने) ॥ ययू अ उ कं गिरुम ४ दानवर्षादिनिमित्तं । विविगवमुसंस्कनं स व (शा रु) समन्वितम् ॥ विद्यास
म्ना दहिन्ती कृकमिर्ग । पा (व्व) र्मसमाय कं दुरुमगनिर्वन्धनं ॥ संयू अ गन्धयूष्मा अ ४ यूवो कवि
न्दिने ॥ शक्रं प्रजयता कथं विमानं मूर्यनिखने ॥ मङ्गले वदद्यामा अ ४ मू धये ४ कन्त (ही) स्मिने ॥ वान
ऊनरोधनं यून न व्वमहीयानं ॥ धर्मवदो ४ खयं गक्र त्वर्वल्लासमन्विता ॥ नूयवाहसियानं हृ कृत्वा य
४ का वथ नृय ॥ दहादि कृवलित्वा नगनस्य समकं न ॥ मा (अपि) यमना गक्र न्वलित्वा नित्रकं न

३ नित्यं हृदये ध्यायेत् ॥ वासुदेवाय नमः ॥ यथा ध्यायेत् ॥ मन्त्रं लेखितं ध्यायेत् ॥ अनीयं यथा यथा
सदा कालं विमलं यथा यथा ॥ नमः ॥ स मा गेता सुखं ॥ कायं यथा यथा ॥ अनीयं यथा यथा ॥
ध्यायेत् ॥ विद्यादानं ललितं ॥ कलकविं नंदं ललाय ॥ स ह्ययं विवाहितः ॥ याया यथा यथा ॥ अनीयं यथा यथा ॥
यत्ना मुक्तिं नागीशं गतं वा दूयात् ॥ स ह्ययं यथा यथा ॥ अनीयं यथा यथा ॥ अनीयं यथा यथा ॥
होमं विहोमं वा ॥ निवृत्तं न वतां ॥ मुद्रा यथा यथा ॥ अनीयं यथा यथा ॥ अनीयं यथा यथा ॥
कुन्ता नमः ॥ यथा यथा ॥ अनीयं यथा यथा ॥ अनीयं यथा यथा ॥ अनीयं यथा यथा ॥
यथा यथा यथा यथा ॥ अनीयं यथा यथा ॥ अनीयं यथा यथा ॥ अनीयं यथा यथा ॥
यथा यथा यथा यथा ॥ अनीयं यथा यथा ॥ अनीयं यथा यथा ॥ अनीयं यथा यथा ॥

पुनस्तस्मिन्नायं नानिहले नवाकले ॥ ४ ॥ सर्वं यत्कुर्वयवे ॥ ४ ॥ स्निग्धे नानि विद्धि मसं हने ॥ ४ ॥ माशान्स्वाप्तसंया
 विविदिता पुन ४ यत्काम्यक लयत् ॥ ४ ॥ जितानि सुत विद्यानां सायनाय वासय ४ यत्तु यत्तु वाना कल्ययडागने वा
 विधि ४ यत्तु हाके ह्यरुहने ॥ ४ ॥ की जयत्तु यथा गच्छे त्रिहर्त कययनिज्ञाना जिवविद्यामान ४ कयोत्यात ४
 समन्वितम् ॥ विद्यासमस्त तमध्व जिवज्ञानस्य यस्मिन्की रुमनत्तविनीदियमथवादन ॥ ४ ॥ रिनी ॥ विधिगय क
 यथा ४ यत्तु कविधितो वध ४ सप्त किं पानय रुक्का गदिमानं जितायमी ॥ ४ ॥ स्र प्रथमस्वनयत्तु यत्तु वीतला
 कलहोस्मिन् ४ वात्र लोचोदिरि चोद्य ४ स्त्री संगीते विरुषिनी ॥ ४ ॥ यत्तु वामनदस्मिन् विरुषिनी ४ यत्तु वामनदस्मिन् विरुषिनी ४ यत्तु वामनदस्मिन् विरुषिनी ४
 हस्तिमान् रुक्का यत्तु कमानयत् ॥ ४ ॥ नाडमा ४ यत्तु मलता नगनात्तम्युदकिर्णी सद्यतनयुजा ४ यत्तु वधने
 ४ यत्तु लिच्छविनित्रकनी ॥ ४ ॥ गच्छयथा रुक्का निध मय क ४ यत्तु नदानगी गच्छयत्तु कन ४ यत्तु सद्यतनयुजा ४ यत्तु सद्यतनयुजा ४ यत्तु सद्यतनयुजा ४

३०

८ ॥

यो ज्ञानी यस्तु यत्तु रुक्का विद्यानत्तकत्रुक् ॥ ४ ॥ गत ४ स्र गच्छयथा ४ जिववत्यति युजयत् ॥ ४ ॥ जिवविद्या
 यत्तु कन ४ यत्तु दकयि ला कमाय यत् ॥ ४ ॥ जिवविद्याया ४ कयो दाय तने स्र ४ ॥ समक ४ यत्तु कन ४ स्र
 गुहमेव यत्तु जिवलाकमही यत् ॥ ४ ॥ यत्तु रुक्का नमासाय विषया विषयत्तु अत ॥ ४ ॥ सन्ध्या प्राणि
 यत् ॥ ४ ॥ सद्यतनयुजा ४ यत्तु वामनदस्मिन् विरुषिनी ॥ ४ ॥ यत्तु वामनदस्मिन् विरुषिनी ॥ ४ ॥ यत्तु वामनदस्मिन् विरुषिनी ॥ ४ ॥ यत्तु वामनदस्मिन् विरुषिनी ॥ ४ ॥
 यत्तु विद्याविहक ४ यत्तु कात्रयनिवात्रिनी ॥ ४ ॥ यत्तु वदीद्विहक ४ यत्तु यत्तु कसुसुसंयत्नी ॥ ४ ॥ यत्तु कसुसुसंयत्नी ॥ ४ ॥ यत्तु कसुसुसंयत्नी ॥ ४ ॥
 यत्तु यत्तु धमनिर्ममतायत्तु यत्तु वामनदस्मिन् विरुषिनी ॥ ४ ॥ यत्तु वामनदस्मिन् विरुषिनी ॥ ४ ॥ यत्तु वामनदस्मिन् विरुषिनी ॥ ४ ॥ यत्तु वामनदस्मिन् विरुषिनी ॥ ४ ॥
 यत्तु वामनदस्मिन् विरुषिनी ॥ ४ ॥ यत्तु वामनदस्मिन् विरुषिनी ॥ ४ ॥ यत्तु वामनदस्मिन् विरुषिनी ॥ ४ ॥ यत्तु वामनदस्मिन् विरुषिनी ॥ ४ ॥ यत्तु वामनदस्मिन् विरुषिनी ॥ ४ ॥

[illegible][illegible]

53

ॐ मर्कटं स्थितिः श्री यशोनाम्ना ह्यस्तु तत्रार्थः वागमरूपा समयावप्रता ॥ विष्णोश्चैव यागिन्दुमात्मना च धनन
यच्चैवेति ॥ यान् गृहीतमानसं सन्मानादि न दिना उच्यते वागमरूपे जीर्णं नरुतो पुत्रः ॥ एवमेव द्वद्व
निष्ठा विवक्षितं रवि शाना रक्षा यादिवि निय ॥ २ ॥ ॥ अथ यमगतं रुक्का रुक्कि विवयागिनामात्त
वयागिनः ॥ यति वयान्नयानन दध्यावस्मासनादि हि ॥ यश्चान्नमस्तुष्टु याल्य कथा किंवयागिनी ॥ द
मिकेशमृतः विवयूर्वागच्छ प्रियफकुलसयूक्त शापवदियमदाहिरुमी सुदुर्ममाना नमो भवत्य काटि
विविधलागे ॥ मुसदुर्मस्वयजित ॥ विष्णुला काद्वफला की सम्याय को जगयन भलागे ॥ सुवियूल ॥ १५
राविधानुक्तुका यथिवाडो यन कुमाना ॥ कुलमरुति विद्या मा पुरुहित लुप्तान्वित ॥ नन ॥ सुयुक्तवन यागिन्दुय
वानियममेयदी ॥ नि यश्चैव नरुकिं सगती विवयाना ॥ सद्वि नियह नियवा ददु यागमवाग्रयागा ॥ अथ यडा

मिकायां श्रीदेवकवारे ॥ १ ॥ कर्म याग ॥ समाखान सुयष्टाद्यायदादिक ॥ १ ॥ स्वाध्याय ॥ जप ॥ ध्याक ॥
यास्याद्यवविविक्तनी ॥ १ ॥ नियम्यकावायंज्ञानयष्टु ॥ १ ॥ कीदृश ॥ १ ॥ उरुत्राहुरवेगिष्टं सर्वेषां विव
नं नास्ति क्षमं विना ध्यानं नास्ति ज्ञानमयागिन ॥ १ ॥ ज्ञान ध्यान ॥ १ ॥ यस्यासिती ॥ १ ॥ सुनरुवा ॥ १ ॥
जायत ॥ १ ॥ गुरुं चिन्तामयं ज्ञनं विकल्पवदुलं यत ॥ १ ॥ कस्मा रुदयुस न त्वोच्च ॥ १ ॥ लन विमुक्तिदं ॥ १ ॥
कृते ॥ १ ॥ मूलमुकल ॥ १ ॥ वर्ध क्रिया काल ॥ १ ॥ चिकित्सा ॥ १ ॥ चिकित्सा ॥ १ ॥ चिकित्सा ॥ १ ॥ चिकित्सा ॥ १ ॥
रुदय ॥ १ ॥ नि ॥ १ ॥ सोमतिक ॥ १ ॥ रुदय ॥ १ ॥ रुदय ॥ १ ॥ रुदय ॥ १ ॥ रुदय ॥ १ ॥ रुदय ॥ १ ॥ रुदय ॥ १ ॥
यज्ञानं ॥ १ ॥ लावनमयमुरुमी ॥ १ ॥ नाग ॥ १ ॥ नाग ॥ १ ॥ नाग ॥ १ ॥ नाग ॥ १ ॥ नाग ॥ १ ॥ नाग ॥ १ ॥
माता ॥ १ ॥ ज्ञानारु सानि ॥ १ ॥ रुदय ॥ १ ॥ रुदय ॥ १ ॥ रुदय ॥ १ ॥ रुदय ॥ १ ॥ रुदय ॥ १ ॥ रुदय ॥ १ ॥

ला
वाग ॥ १ ॥ नाज्ञानस्तानयमहं किञ्चिन्नातानयमिदं ॥ १ ॥ विज्ञानो वदविदधी कोटिं मृहा ॥ १ ॥ अयकुली ॥ १ ॥ रिक्तामायप्रदानन
लुवसेहिनी ॥ १ ॥ यज्ञानिहामनि ॥ १ ॥ यज्ञानिहामनि ॥ १ ॥ यज्ञानिहामनि ॥ १ ॥ यज्ञानिहामनि ॥ १ ॥ यज्ञानिहामनि ॥ १ ॥
नीमी ॥ १ ॥ नायिगमानमी ॥ १ ॥ नायिगमानमी ॥ १ ॥ नायिगमानमी ॥ १ ॥ नायिगमानमी ॥ १ ॥ नायिगमानमी ॥ १ ॥
किञ्च यागिनी ॥ १ ॥ मृगद्वी ॥ १ ॥ मृगद्वी ॥ १ ॥ मृगद्वी ॥ १ ॥ मृगद्वी ॥ १ ॥ मृगद्वी ॥ १ ॥ मृगद्वी ॥ १ ॥
मना ॥ १ ॥ मना ॥ १ ॥ मना ॥ १ ॥ मना ॥ १ ॥ मना ॥ १ ॥ मना ॥ १ ॥ मना ॥ १ ॥
याहि ॥ १ ॥ याहि ॥ १ ॥ याहि ॥ १ ॥ याहि ॥ १ ॥ याहि ॥ १ ॥ याहि ॥ १ ॥ याहि ॥ १ ॥
रु ॥ १ ॥ रु ॥ १ ॥ रु ॥ १ ॥ रु ॥ १ ॥ रु ॥ १ ॥ रु ॥ १ ॥ रु ॥ १ ॥
हालिने ॥ १ ॥ हालिने ॥ १ ॥ हालिने ॥ १ ॥ हालिने ॥ १ ॥ हालिने ॥ १ ॥ हालिने ॥ १ ॥

三

181

लयातथारुलविषयेष्वस्वादलिः सदसंरुली। गुणखधुकरंरुके। वनेयलियाविने॥ काटिगहप्रमुतिर्गः
 वाग्रिगुनकस्थीर्गदधिगर्कनयायर्कं तत्पुष्पं तत्पुष्पंस्वादभाधिकं॥ नसालासुधर्नांभागी कथनसूत्रहीकृता
 मित्राखधुयकनमानादसुधिकंरुलीयथायथाहिस्वादनिस्तिग्धानिसूत्रहीतिवारुक्कान्नयानमासानि तत्तु नानि
 यमाप्रयाता। नवयः कननर्धद्वंरुफितः॥ गितयागिजामा। सयिहसर्वपायह्यः समुद्रस्वदिवनयं॥ गङ्गास्ना
 यस्वः॥ प्रधामादिवयागिनी। धुध्रमयित्वारुक्का उधिवलाकमहीयता॥ यगयपडिगागनवक्कविष्णुमरुध्वन
 ताभायः॥ स्नादपूजयर्कृक्का विहासाद्विवयागिनः॥ नयिनः॥ सकलकश्चिजूनयत्युपमीदृसी। यमपूज्यमिवंधा
 गेलंस्त्रुजयधनिः॥ गितयागिनमाया। नदृष्टे वरुहसीकिरी। कोउन्हासधयसर्वायास्यामः॥ स्वप्नेमद्वयी॥ नून
 थिमायात्तमनगद्वकृताश्चलिः॥ स्वागतासनयाद्याद्यस्नानान्नहायनादिहिः॥ नूयाकिगन्धिवयीदा। मलिनेमलिनाः

३७

स्नाना॥ ननचननवयिनि नधर्मः॥ पियवर्जित॥ दानवतानिनियमायह्नाश्चानकगनकयः॥ यनयनायिकर्तसर्वकाधः
 ननकैतदिययया। डोदार्कस्वागर्गभगि। मनकम्याममसुबीगुलानावरुणयड्ड। दाउदानमरुहृली॥ वाभाधः
 धी। गकधुवदयवर्ती। ह्युह्यायाः॥ कीरिगादगाः॥ सुनसिदनिमविगाः॥ सर्वगिवाधमाः॥ यथास्वचानयस्मयचः
 गतातदननकः॥ लंरुयः॥ गिवक्यानलवगः॥ यदलः॥ श्रुत्युह्याः॥ दक्षिणयनमरुबीविधुतसवतिपायी। यद
 म्यव्यविवदनधारकिरुवययापिनी। गितधर्मकतानगायनियारिनीतिरुयं॥ द्याययाययः॥ धिदमा
 विधिवत्यतियादिनी। तदननकः॥ लंरुयं॥ मयिवासायगायकः॥ नारुषुगुलानिह्ययद्वयस्वत्यामधियदरुमान
 रयमा। धिदानेः॥ कीरिगातसा। चधदागः॥ लंरुवगा॥ ॥ रुतिगा। गिवधमरुनसुत्यायपदानायायः॥ उथ
 मीयाययदगः॥ हिमादायविनिमूकः॥ कृष्णायासविवर्जिताः॥ सबरुगहिनाः॥ दुर्वाः॥ ससूजाः॥ समरुहृलाः॥

30

याज्ञिनाशमयानि विष्णुवर्ण दिव्यशक्तिमन्मन्त्रिन्। अथविष्णुयन्त्रादौ दिव्यशिवयन्त्रमदन्तु। राहागस्त
यन्त्रार्थः सर्वपापप्रकाशकः॥ मरुसुखमविस्तरिषु सुखकोटिसमयलं। अथलाकमितिपाकम। (१) कम्प
नामनी। अथकदितमरुक्ता यः पूजयति शकनी साधियानि शिवस्नानं किंपुनर्वदु। (२) अथयन्त्रागस्तमदि (३) सदा
कथनाधिकमस्तानने॥ स्नानान्यवयक्त दशरुवा नूपयत॥ ३३ अथयन्त्रार्थपाकं शीमद्वितयन्त्रमदन्तु। यद्विनी
३३ स्कन्दासाधकनामकं॥ स्कन्दशक्तिधर्मशान्तिप्रभुसर्वशक्तिव्याहर्तु। तययामीकत्रयशक्तिविरवालनू
तवाप्नुयात्॥ किन्त्या नूयामूर्माशानां सुखकाटिसमयलं॥ आयमानः सदा रुक्ता यथाः स्नानमवाप्नुयात्
वनदारुयदस्तद्विष्णुलाहाकयागिर्का। आयमानः शिवनिखयसन्नासा शिवस्नानमवाप्नुयात्॥ यमप्राप्त
॥ सर्वगः॥ ३३ द्वाः यन्त्रविष्णुमरुद्वना॥ शिवकुललवलासिद्धा॥ यन्त्रशिवयन्त्रगता॥ योग्यवदयि

आमि यथ गथायसी हिंसी डय विस्वला काना सन्यय वायन कमाता गथा सु सु समे शय म्या विवचि गिता हि
 धा। एत वनि नव ८६४ यक क सन्य वग कसं॥ गन्धर्वो वाक्त्रवा यवा या कश्च स कल स रीये ३३० निच
 हान मरुता नमु धा विगी॥ यउ ३४ विरु व म्वा धी मोर्द न च यो मरुम॥ विष्णु य धानिक सु र्म न्ने श्व यध व
 दग॥ ग्रादि म धान न विगी विरु द्वा न लल कर्ष॥ स चो लि राय को सु क मनो य म्या य ना लार्ग स र्म य र्हु ऊ म
 एव विरु य सा दग॥ गाना न्य विमाना ना मिमा द धानि का ट य ३॥ नृप विरु नि यार्द सु दी या ३३ द द ल
 गा॥ नाम स की रु नी यि य सी गन शिव सय ३॥ क या द्रा यिन म कान न न स विरु ली क वग॥ ३३ गग न य ३३
 शिव धर्मी ३३ नृप विरु य न ३३ म ग नि ना म य ३३ मा ध्या य ३॥ ३॥ ॥ नृप धाय न ना ल्य सा म धर्म ३३ य वि वि
 रा ३॥ सु ना ३३ द्वा ध्य का टि रु द न न क धा॥ गव श या य वि च या ३३ सु नान न क रु ग व ३३ न म मा स न क ध क

नायका ३३ गग ना सु वा न ३३ सु म की द्वा य न ३३ सु वी व न रु धा ३३ म द मा यी वि वा म ध्व सु वा म ध्व क ट का ट ३३ गी व क
 वी म र्म ३३ सु न म ध्व स्वा द क ३३ सु य यी व न ३३ क ही या क ३३ सु या क ध्व क क व ध्या नि दान व ३३ नृ ग न ना हि रु व न ३३
 मी या द व ल य ३३ ड क स क ध्व नि नृ क्वा स ३३ सु दी र्घ कू ट ३३ लु लि ३३ द वि र्म सु म क ना द सी न य व ३३ सु य वा रु या ३३ म यै क म
 मी व न का ह्या ३३ सु र्म क म ध्व वा य ३३ ३३ ३३ लु क ऊ ली का ध्व ३३ द ल क यि क क टा ३३ ग ग क ३३ य वि व क्वा ध्व न क
 वा ना ३३ क न ३३ लाला रु दाल रु द ध्व सु र्म रु द ३३ सु दान ३३ ३३ क ट ३३ सु वि गाल ध्व वि क ट ३३ क ट य न न ३३ नृ म वि र्म
 म र्म रु ग य पी जी गी गिला ग सी द्वा नु नि कृ ग या ग य म र्म न ३३ म रु द नी सु व नी व न क लारु म यी डी ला ३३ य र्म न ३३
 रु गिला डी का ट ली गली गाल य या सि ग रु न म रु म ग क म ध्व यी स मा रु ना हि रु ग ध्व न क म ल म यी ध्व र्म व क द
 या द ध्व री व ३३ वी वि र्म नि म ३३ नृ म वि र्म नि वि र्म न क म ३३ य ३३ ना य का ३३ का टी ना म न र्म व ३३ य ३३ य ३३ व ना य का

١٣٧

[illegible]

छिता ॥ १ ॥ लनक स्य ॥ २ ॥ अथ मधुना नृपा ॥ ३ ॥ कनडा कनकनय ॥ यदधमं शु ॥ ४ ॥ कर्ता ॥ न हर्षे सम्य निरुक्त ॥ यूर्यमका किन ॥
 वगा ॥ ५ ॥ ववक विरधे वीर्य ॥ ६ ॥ नय लदाय मनेन ॥ ७ ॥ वन ॥ ८ ॥ स्वामिक मां वि ॥ ९ ॥ ह्वै ॥ निरुक्तिया विवा ॥ १० ॥ निधर्म समदि ॥
 नय निनिमाना ॥ विध्वय धयाय ॥ ११ ॥ कर्मन लनका गिर ॥ १२ ॥ गग ॥ १३ ॥ समुत्तम ॥ १४ ॥ नपा ॥ १५ ॥ कया दया ॥ १६ ॥ म वि ॥ १७ ॥ निवा ॥
 ॥ १८ ॥ मला ॥ १९ ॥ म ॥ २० ॥ वन ॥ २१ ॥ क ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥
 ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥
 ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥
 ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥
 ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥
 ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥
 ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥
 ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥ ॥

डा ॥ १ ॥ नाना माधवी नाना मस्य ॥ २ ॥ वन ॥ ३ ॥ नृपा ॥ ४ ॥ क ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥
 ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥
 ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥
 ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥
 ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥
 ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥
 ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥
 ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥
 ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥
 ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥ ॥

[illegible][illegible]

[illegible]

॥ अथ वा ॥ यत्तु कदापि वा कदा वा कदा मर्त्ये लिनामपि कृतं नैव हि ददवशा स्वकर्म त्यागिन इत्यथा ॥ ४८ ॥ ला
य ॥ न ज्ञातृत्वा या यो नो य म धर्मे नैव ॥ ४९ ॥ समाच न वा क्ति यत्तु मिष स म्प्री न वा ॥ ५० ॥ द द का इव य ॥ ५१ ॥ ऊन स्या
॥ ५२ ॥ न क य कि क्ति नाना ॥ ५३ ॥ या क रु द क वा तिय ॥ ५४ ॥ ह्ये नै ॥ ५५ ॥ मी न न ॥ ५६ ॥ या ये न य पा न कि न ॥ ५७ ॥ सृ ता ॥ ५८ ॥ या क
॥ ५९ ॥ य सि नी ॥ ६० ॥ न क नै य ॥ ६१ ॥ का र्थे य ॥ ६२ ॥ सृ ता नाना कान न वा ॥ ६३ ॥ या य न ॥ ६४ ॥ या कि न य न ॥ ६५ ॥ य य न ॥ ६६ ॥ य व का
॥ ६७ ॥ य य ॥ ६८ ॥ य य ॥ ६९ ॥ य य ॥ ७० ॥ य य ॥ ७१ ॥ य य ॥ ७२ ॥ य य ॥ ७३ ॥ य य ॥ ७४ ॥ य य ॥ ७५ ॥ य य ॥ ७६ ॥ य य ॥ ७७ ॥ य य ॥ ७८ ॥ य य ॥ ७९ ॥ य य ॥ ८० ॥ य य ॥ ८१ ॥ य य ॥ ८२ ॥ य य ॥ ८३ ॥ य य ॥ ८४ ॥ य य ॥ ८५ ॥ य य ॥ ८६ ॥ य य ॥ ८७ ॥ य य ॥ ८८ ॥ य य ॥ ८९ ॥ य य ॥ ९० ॥ य य ॥ ९१ ॥ य य ॥ ९२ ॥ य य ॥ ९३ ॥ य य ॥ ९४ ॥ य य ॥ ९५ ॥ य य ॥ ९६ ॥ य य ॥ ९७ ॥ य य ॥ ९८ ॥ य य ॥ ९९ ॥ य य ॥ १०० ॥ य य ॥